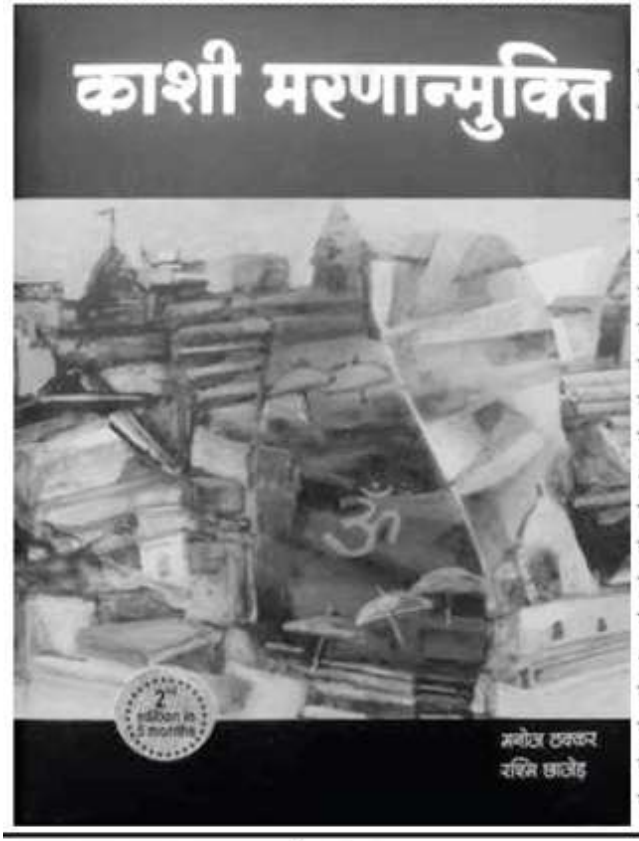

इस माह के पुस्तक समीक्षा कॉलम के अंतर्गत हम अपने सम्मानित पाठकों के लिए लाए हैं पुस्तक-"काशी मरणान्मुक्ति" की समीक्षा।

काशी मरणान्मुक्ति के लेखक मनोज ठक्कर और रश्मि छाजेड़ द्वारा लिखा गया एक आध्यात्मिक उपन्यास है। 502 पन्नों तथा तथा 69 अध्यायों के इस उपन्यास में भारतीय इतिहास, तंत्र-मंत्र, योग, मोक्ष, पुराणों का वर्णन एक कहानी के रूप में बुन कर किया गया है। उपन्यास को पूरा पढ़ने हेतु आपको धैर्य रखना अनिवार्य है परंतु एक बार उपन्यास को पढ़कर आप लेखक के कार्य की सराहना करे बिना नहीं रह पाएंगे। यह उपन्यास एक चाण्डाल महा की कहानी है जो एक नवजात शिशु के रूप में यशोदा और राघव को शमशान में मिलता है। राघव की मृत्यु के बाद यशोदा ही महा की देखरेख करती है। बाल आयु से ही महा को शमशान तथा मोक्ष में रुचि रहती है तथा वह शमशान में ही अपने मुंहबोले चाचा बाबा भूमनाथ से शिक्षा ग्रहण करता है। जबकि उसका चाचा स्वंय को उसका गुरु नहीं मानता। उपन्यास में गुरु शब्द का मूल्यार्थ भी गहराई से वर्णित किया गया है। उपन्यास में महा की मोक्ष रूपी इच्छा तथा काशी में अंततः मोक्ष प्राप्ती को बहुत अच्छी तरह वर्णित किया गया है। काशीमरणान्मुक्ति में वाराणसी, काशी, गंगाघाट आदि धार्मिकस्थलों तथा कई शमशानों का वर्णन सुंदरता से किया गया है। आध्यात्मिक उपन्यासों में रुचि रखने वाले लोगो के लिए यह एक उपहार है। युवाओं में शायद इस गंभीर विषय को संभालने की समझ कमतर ही मिले तो वह इससे दूर ही रहें।